

Topic

(1) Possibility

Dr. Surita Kumari  
Department of Philosophy,  
B.A Part - I

Ans:-  
दर्शन की  
मुख्य समस्या

Paper - II (H.7)  
A.N.D. College Shahpur Postory,  
Samastipur.

ज्ञान की समस्या है, अज्ञान ज्ञान  
क्या है, और ज्ञान की प्रार्थना  
किस प्रकार सम्भव है? मानव  
चिंतन को परिसीमा क्या है,  
उन्होंने इन्हीं प्रश्नों का अपने  
दर्शन में उत्तर दिया है, इन  
प्रश्नों का उत्तर में कुछ निर्णय  
निषेधात्मक होते हैं जबकि कुछ  
स्वीकारात्मक होते हैं। किन्तु इस  
विषय में यह दृष्टान्त रखना आवश्यक  
का है कि विरलेषजात्मक निर्णय  
में जो कुछ किसी के विषय  
में कहा जाता है वह उसके  
अवश्य में पूर्व से ही विद्यमान  
होना है। अतः विरलेषजात्मक  
निर्णय का तत्त्व उस निर्णय

से होना है जिसमें विद्यथ  
 उद्येश्य के विषय में कोई नई बात  
 नहीं कहना अपितु ऐसी बात कहना  
 है जो आद्यार वाक्यों में पहले से  
 ही कही होती है, इसके अतिरिक्त  
 दूसरे प्रकार के निर्णय संश्लेषणा-  
 त्मक होते हैं जिनमें विद्यथ  
 के द्वारा उद्येश्य के विषय में  
 किसी नयी बात का उद्घाटन  
 किया है यथा शरीर एक वृद्धि  
 का प्राप्ता होने वाली वस्तु है,  
 यदि इसके ज्ञान द्वारा प्रमाणित  
 किया जाय तब वह यह निर्णय  
 संश्लेषणात्मक नहीं कही जा सकती

अर्थात् इन्हें विज्ञान का  
 निर्णय नहीं कहा जा सकता  
 क्योंकि अनिवार्यता और सार्वभौमिक  
 ता इनकी सर्वेक्षण और

प्रत्यक्ष कला में नहीं अपितु प्रकृत  
 प्रजा है और द्वारा विचार के अंत में  
 अनुभव के बिना हम उन्हें  
 रूप में भी अनुभव पूर्व है इस  
 जैसे तीन भुजाओं वाले त्रिभुज  
 का लक्षण है कि नाम कला से  
 होता है यह सब सत्य  
 है कि जो सदैव एक ही  
 है उन (जब) यह सत्य होवे -  
 निष्ठा अक्षय में गणित, ज्यामि  
 आदि के आदि के विषय विषय  
 तथा विभिन्न विज्ञान के  
 निष्ठा संश्लेषणालोक होते हैं

अपने इस प्रकार का-ए के ने  
 अपने ज्ञान के विज्ञान में यह  
 रूप में करने का प्रयास किया  
 है कि हमारे ज्ञान का कितना  
 अंश इन्द्रिय अनुभव द्वारा  
 प्राप्त होता है और कितना अनुभव  
 पूर्व का होता है

कि हमारे अपने ज्ञान विज्ञान में  
 ए-ए